>

Title: Need to conserve sites of archaeological importance in District Saharsa, Bihar.

श्री दिनेश चन्द्र यादव (खगड़िया): बिहार राज्य अंतर्गत सहरसा जिला के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल महिषी गांव एवं इसके इर्द-गिर्द महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरातत्व दबे पड़े हैं। आठवी-नौंवी सदी में जगत प्रसिद्ध, तत्वदर्शी दार्शनिक एवं महान पंडित मंडन मिश्र का जन्म स्थान सुप्रसिद्ध महिषी गांव ही है । पंडित मंडन मिश्र अद्वैत वेदांत के अदभुत विद्वान थे । उनकी धर्म पत्नी विदुषी भारती थी ।

महिषी का प्राचीन उग्रतारा मंदिर राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र बने रहने के कारण बड़ी संख्या में सैलानी यहां आया करते हैं । यहां प्राचीन भवन के साथ प्राचीन काल की काले पत्थर से बनी मूर्तियां बिखरे पड़ी हैं, जो पर्याप्त देखरेख के अभाव में जीर्ण-शीर्णता का शिकार हो रहे हैं।

उक्त स्थल पर दो साल पूर्व खुदाई में दो प्राचीन कुएं भी देखने को मिले हैं जो भोज काल के होने के प्रमाण को प्रमाणित करता है । उग्रतारा मंदिर एवं मंडन धाम के बगल में ही धेमरा नदी के तट पर गोरहो घाट के पास मिट्टी के नीचे दबे 58 मौहर सहित सिक्के वर्ष 1905 में खुदाई के दौरान मिले थे । अंग्रेजी हुकूमत में इस स्थल को वर्जित क्षेत्र घोषित कर आम आदमी द्वारा खुदाई पर रोक लगा दी गई थी। परंतु आज तक इस दिशा में भारतीय पुरातत्व सर्वे ने कोई ध्यान नहीं दिया । आज यह प्राचीन एवं ऐतिहासिक, धरोहर कोशी की बाढ़ में नष्ट होता जा रही है ।

श्री एम.एस.नागराज राव, डायरेक्टर जनरल भारत ने अपने पत्र द्वारा अधीक्षक, पुरातत्व मिड इस्टर्न सर्किल, पटना को उक्त स्थल की खुदाई से संबंधित प्रारूप तैयार कर आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया था । पटना सर्किल ए.एस.आई. स्टैंडिंग कमेटी सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड ए.एस.आइ. को लगातार दो वर्षों वर्ष 2007 एवं वर्ष 2008 में प्रारूप भेज चुकी है, लेकिन उस पर कोई कार्यवाही नही हो रही है, जो खेदजनक है ।

अतः सरकार उक्त स्थल की खुदाई करवा कर यहां दबे अति प्राचीन ऐतिहासिक पौराणिक वस्तुओं एवं महत्वपूर्ण पुरातात्विक धरोहर की खोज करें जिससे इन स्थानों की ख्याति उजागर हो सके ।